भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

ICAR-central Institute for Cotton Research, Nagpur

An ISO 9001:2015 Certified Organisation

कपास की खेती के लिए 9 से 15 जून 2025 तक दूसरी साप्ताहिक सलाह

हरियाणा		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)						अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		जून						जून				
		04	05	06	07	08	09	11	12	13	14	15
	हिसार	1.4	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0.1
	जींद							0	0	0	0.1	0.1
	सिरसा							0	0	0	0	0
	रोहतक							0	0	0	0	0.4
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 से 2.4 मिमी		2.5 से 15.5 मिमी		15.6 से 64.4 मिमी			64.5 से 115.5 मिमी		115.6 से 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा			भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

हिसार में, फसल 35 से 40 दिन पुरानी है और वनस्पति से फूल आने की अवस्था में है। रिपोर्टिंग अवधि के दौरान विरलन, निराई और हाथ से गुड़ाई का काम किया गया। खेतों में मोथा, सांठी और मकरा जैसे खरपतवार पाए गए। थ्रिप्स, व्हाइटफ्लाई और जैसिड की शुरुआती आबादी दिखाई देने लगी है, लेकिन आर्थिक सीमा स्तर से काफी नीचे है। फूलों में गुलाबी सुंडी का संक्रमण दिखाई देने लगा है। उच्च तापमान के कारण कपास के पौधे जल रहे हैं। कुछ खेतों में जड़ सड़न देखी गई है।

सिरसा में, फसल 40 से 50 दिन की वनस्पतिक अवस्था से फूल आने की अवस्था में है। जल्दी बोई गई फसल में अंतराल भरना, विरलन करना, पहली सिंचाई और ट्रैक्टर से कल्टीवेटर/बैल और ऊँट द्वारा अंतर-संस्कृतिक कार्य प्रगति पर हैं। कुछ खेतों में खरपतवार उग आए हैं। कुछ स्थानों पर तनाव पुष्पन और जैसिड संक्रमण देखा गया।

सलाह:

हिसार में, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे फसल की वृद्धि के अनुसार हाथ से खुरपी या कसोला से निराई करें, जहां खरपतवार का प्रकोप दिखाई देने लगा है और वर्षा हुई है। रस चूसने वाले कीटों की आबादी आर्थिक सीमा स्तर से कम है और इसलिए, रासायनिक कीटनाशकों का छिड़काव करने की कोई आवश्यकता नहीं है। 35-40 दिनों से अधिक पुरानी फसल में गुलाबी सुंडी कीट की निगरानी के लिए 2/एकड़ की दर से गुलाबी सुंडी फेरोमोन ट्रैप लगाएँ और 3 दिनों के अंतराल पर कीटों की आबादी दर्ज करें। कपास के खेतों के पास रखे पिछले मौसम के कपास के डंठलों को ढक दें और सूखे पत्ते और खराब रूप से खुले/बंद बीजकोषों को नष्ट कर दें। गुलाबी सुंडी के संक्रमण के लिए कम से कम 100 फूलों की जांच करें। फूल में गुलाबी सुंडी के संक्रमण (>5-10%) के मामले में, प्रोफेनोफोस 50EC @ 2-3 मिली/लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। जड़ सड़न से प्रभावित क्षेत्र में, प्रभावित पौधों को कार्बेन्डाजिम @ 2 ग्राम/लीटर पानी से भिगोएँ।

सिरसा में किसानों को सुझाव दिया जाता है कि वे पौधों की स्थिति बनाए रखने के लिए जहाँ भी संभव हो, मौजूदा नमी से अन्तराल भरें। अगर फसल 40-50 दिन की हो गई है तो खेत में सिंचाई करें। यदि फसल 45-50 दिन की हो जाए तो सिंचाई या बारिश के बाद यूरिया उर्वरक की पहली विभाजित खुराक डालें। फसल को खरपतवार मुक्त रखने के लिए कसोला/खुरपा या ट्रैक्टर/बैल/ऊँट से चलने वाली त्रिफली के साथ अंतर-संस्कृतिक कार्य के साथ हाथ से निराई करें। वैकल्पिक रूप से, वार्षिक घास और चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए पाइरिथियोबैक सोडियम 6% + क्विज़ालोफ़ॉप एथिल 4% 10MEC @1,250 मिली / हेक्टेयर का छिड़काव करें या फसल की पंक्तियों के बीच खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए पैराक्वाट @1,250 मिली / हेक्टेयर या ग्लूफ़ोसिनेट अमोनियम @2,250 मिली / हेक्टेयर को 200-250 लीटर पानी / एकड़ में मिलाकर निर्देशित स्प्रे (सुरक्षात्मक हुड का उपयोग करके) के रूप में छिड़कें। फेरोमोन ट्रैप लगाएँ और रोसेट फूल (गुलब्बत फूल) की नियमित अंतराल पर 45 DAS निगरानी करें। जड़ सड़न को नियंत्रित करने के लिए जड़ क्षेत्र को कैबेन्डाजिम @ 2.0 ग्राम/लीटर या ट्राइकोडर्मा एसपीपी @ 10 ग्राम/लीटर पानी से भिगोएँ।

राजस्थान		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)						अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		जून						जून				
		04	05	06	07	08	09	11	12	13	14	15
	अजमेर							0	0	0	0	0.1
	जोधपुर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0.1	0.1
	नागौर							0	0	0	0	0
	पाली							0	0	0	0	0.1
	श्रीगंगानगर							0	0	0	0.1	0.1
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 से 2.4 मिमी		2.5 से 15.5 मिमी		15.6 से 64.4 मिमी		64.5 से 115.5 मिमी			115.6 से 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा		भारी वर्षा			बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में फसल 15 से 40 दिन की अंकुरण/वनस्पतिक अवस्था में है। नहर का पानी देर से छोड़े जाने के कारण श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ दोनों जिलों में बुवाई में देरी की खबरें हैं। कुछ स्थानों पर बुवाई के बाद सिंचाई की गई है; हाथ से निराई/गुड़ाई और अंतर-संस्कृति कार्य चल रहे हैं। इट्सिट (ट्राइएनथेमा प्रजाति), टैंडला (डिगेरा आर्वेन्सिस) और मोथा (साइपरस रोटंडस) जैसे खरपतवारों ने फसल को नुकसान पहुंचाया है।तैला का प्रकोप 0 से 1.00/पत्तियों पर, सफेदमख्ही का प्रकोप 0 से 7.00/3पत्तियों पर और थ्रिप्स की संख्या 0 से 4.00/3पत्तियों पर देखी गई।

सलाह:

किसानों को सलाह दी जाती है कि वे अधिकतम उर्वरक उपयोग दक्षता के लिए पहली सिंचाई के बाद नाइट्रोजन उर्वरकों की अनुशंसित खुराक डालें। सिंचाई से पहले नाइट्रोजन उर्वरकों का छिड़काव करने से बचें क्योंकि इससे उर्वरकों का रिसाव होता है। कपास के खेतों के आस-पास खरपतवारों को हटाएँ। कीटों और बीमारियों के लिए फसल की नियमित निगरानी करें। चूसने वाले कीटों और गुलाबी सुंडी को नियंत्रित करने के लिए नीम आधारित कीटनाशकों को 5 मिली/लीटर पानी की दर से छिड़कें।

मध्य प्रदेश		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)						अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		जून						जून				
		04	05	06	07	08	09	11	12	13	14	15
	खरगाँव	7	0	7	0	0	0	0	1.9	5	21.2	14.1
	धार							0	0	1.4	9	8.4
	खांडवा											
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 से 2.4 मिमी		2.5 से 15.5 मिमी		15.6 से 64.4 मिमी		64.5 से 115.5 मिमी			115.6 से 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा		भारी वर्षा			बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

खंडवा में खेत की तैयारी का काम चल रहा है।

सलाह :

कपास की फसल की मौसम से पहले बुआई को हतोत्साहित करें। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे केवल जल्दी से मध्यम पकने वाली किस्मों/ संकरों की ही खेती करें। उन खेतों में कपास की खेती करने से बचें, जहां पिछले साल यही फसल बोई गई थी।

मौसम के बाद और बुवाई से पहले की प्रथाओं का पैकेज

1. पिछले फसल मौसम के बचे हुए डंठलों और आंशिक रूप से खुले हुए बीजकोषों को खेतों से साफ करें। उखाड़े गए कपास
के डंठलों को खेत की मेड़ों पर न रखें। फसल के मौसम के अंत में, पिछली पीढ़ी के गुलाबी बॉलवॉर्म लार्वा फसल के अवशेषों जैसे कि संक्रमित बॉल्स, डंठल या मिट्टी में सुसुप्तअवस्था/हाइबरनेशन में प्रवेश करते हैं। इसलिए, गुलाबी बॉलवर्म के जीवन चक्र को तोड़ने के लिए ऐसे संक्रमित अवशेषों को तुरंत नष्ट कर देना चाहिए। अवशेषों के नष्ट होने से जीवाणु पत्ती झुलसा, जड़ सड़न और फंगल पत्ती धब्बे जैसी बीमारियों से नए कपास की फसल के इनोकुलम और संक्रमण को कम करने में भी मदद मिलेगी।

2. फसलकाल के बाद कीट या आत्मघाती पतंगे, यदि कोई हों, को फंसाने के लिए मार्केट यार्ड और जिनिंग मिलों के परिसर
में 20 मीटर की दूरी पर कम से कम 10 फेरोमोन ट्रेप/जाल स्थापित करें।. फेरोमोन जाल में लूर समय पर बदलें। क्षतिग्रस्त बीजों से निकलने वाले लार्वा को भी मार दे। इससे जिनिंग या मार्केट यार्ड परिसर से आस-पास के खेतों तक गुलाबी बॉलवर्म के संक्रमण को फैलने से रोकने में मदद मिलेगी।

3. कपास की फसल की मानसून पूर्व बुआई से बचें। जल्दी बोई गई फसल में स्क्वेरऔर फूल जैसी प्रजनन संरचनाएं जल्दी आ जाती हैं। पिछले सीज़न की सुसुप्तअवस्था से निकलने वाले गुलाबी बॉलवॉर्म इन स्क्वेर और फूलों पर अंडे देते हैं, इस प्रकार जल्दी बोई गई फसल नए सीज़न में गुलाबी बॉलवॉर्म की पहली पीढ़ी को पूरा करने में मदद करती है। यदि समय पर नियंत्रित नहीं किया गया, तो इस आबादी की अगली पीढ़ियां समय पर बोई गई कपास की फसल के स्क्वेर, फूल और बीजकोषों की लगने के साथ फैलती हैं।

4. गर्मियों में गहरी जुताई करने से अप्रैल-मई में सूरज की चिलचिलाती गर्मी के कारण मिट्टी में छिपे सुप्त लार्वा और प्यूपा को बाहर निकालने और मारने में मदद मिलती है। इसके अलावा, जुते हुए खेतों का अनुसरण करने वाले पक्षी, कीड़ों के इन
जीवन चरणों का शिकार करते हैं। इससे आने वाले मौसम की कपास की फसल पर गुलाबी बॉलवॉर्म, पत्ती खाने वाले कैटरपिलर जैसे कीटों और विल्ट, जड़ सड़न और नेमाटोड जैसी मिट्टी जनित बीमारियों को कम करने में मदद मिलती है।

5. गुलाबी बॉलवर्म के जीवन चक्र को तोड़ने के लिए पिछले सीज़न के दौरान जिन खेतों में पिंक बॉलवर्म का अत्यधिक प्रकोप
था, वहां फसल चक्र अपनाना चाहिए। कपास गुलाबी बॉलवर्म का एकमात्र भोजन स्त्रोत है, इसलिए फसल चक्र इस कीट के जीवन चक्र को तोड़ने में मदद करता है। रोगग्रस्त खेतों में मृदा जनित रोगों और सूत्रकृमि के संक्रमण को रोकने में फसल चक्र बहुत प्रभावी है।

6. कपास की रस चूसने वाली कीट और रोग प्रतिरोधी, कम अवधि वाली और जल्दी पकने वाली किस्में/संकर/किस्में उगाएं।
इससे फसल के शुरुआती विकास चरण के दौरान रस चूसने वाले कीटों और बीमारियों को नियंत्रित करने के लिए कीटनाशकों के अवांछित छिड़काव से बचने में मदद मिलती है। गुलाबी बॉलवर्म का संक्रमण मध्य सीज़न से शुरू होता है और सीज़न के अंत तक लगातार बढ़ता है। इसलिए, कम अवधि और जल्दी पकने वाली किस्में देर के मौसम में गुलाबी बॉलवर्म के संक्रमण से बचने में मदद करती हैं।

7. कपास की फसल की बुआई जून माह में 80-100 मिमी मानसूनी वर्षा होने पर ही करनी चाहिए। उचित अंकुरण और फसल की उचित संख्या सुनिश्चित करने के लिए, प्रारंभिक अंकुर चरण के दौरान लंबे समय तक शुष्क अवधि का सामना करने
के लिए, मिट्टी में इष्टतम नमी होनी चाहिए। इससे वर्षा के लंबे समय तक शुष्क रहने के कारण दोबारा बुआई से बचने में भी मदद मिलती है। जून में समय पर बुआई करने से गुलाबी सुंडी के शुरुआती संक्रमण से बचने में मदद मिलती है।

8. गुलाबी बॉलवॉर्म के प्रबंधन के लिए एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम) रणनीति के कार्यान्वयन के संबंध में कपास किसानों के बीच जागरूकता बढ़ाई जानी चाहिए। दुकानदारों को यह भी सलाह दी जा सकती है कि वे किसानों को प्री-मानसून बुआई न करने के लिए सूचित करें। इससे किसानों तक सही संदेश अधिक प्रभावी ढंग से पहुंचाने में मदद मिलेगी।